विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 24 : अंक 23 : नई दिल्ली : 31 अगस्त-6 सितम्बर 2018

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण-श्रमणीवृंद चेन्नई में सानंद चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। चतुर्मास स्थल परिसर में धार्मिक ठाठ लगा हुआ है। हजारों श्रद्धालु पूज्यप्रवर की सेवा-उपासना का लाभ ले रहे हैं। चेन्नई के अन्य जैन समाज और जैनेतर समाज भी आचार्यप्रवर के विलक्षण व्यक्तित्व से प्रभावित हैं। यही कारण है कि वे लोग भी बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ उपस्थित होते हैं। प्रायः प्रतिदिन होने वाली वर्षा तापमान को संतुलित बनाए हुए है। पर्युषण पर्वाधिराज अब सन्निकट है। ७ सितम्बर से प्रारम्भ होने वाले पर्युषण के नवाह्निक कार्यक्रम १५ सितम्बर को क्षमापना दिवस के साथ परिसम्पन्न होंगे। १४ सितम्बर को पर्युषण का शिखर दिवस संवत्सरी महापर्व के रूप में मनाया जाएगा। पर्युषण के पश्चात् देश के विभिन्न क्षेत्रों से हजारों लोग संघबद्ध रूप में पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ पहुंचेंगे, ऐसी सूचना प्राप्त हो रही है।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण चेन्नई में

अंतिम श्वास तक साथ रहे धर्मश्रद्धा

२३ अगस्त। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'आराधना दो प्रकार की होती है--धार्मिकी आराधना और कैवलिकी आराधना। जो आराधना धार्मिकों के द्वारा की जाती है, वह धार्मिकी आराधना कहलाती है। जैसे-सामायिक, पौषध, उपवास, स्वाध्याय आदि। साधु के द्वारा की जाने वाली धार्मिक आराधना भी धार्मिकी आराधना होती है। अतिचारों के बिना जो धार्मिक क्रिया की जाती है, वह धार्मिकी आराधना होती है। प्रवचन करना और प्रवचन श्रवण करना दोनों धार्मिकी आराधना के उपक्रम हैं। ज्ञानाराधना, दर्शनाराधना, चारित्राराधना और तपः आराधना धार्मिकी आराधना हैं।

कैवलिकी आराधना वह होती है, जो केवली के द्वारा की जाती है। केवलज्ञान को प्राप्त करने वाले तो केवली होते ही हैं, मनःपर्यवज्ञानी, अवधिज्ञानी और चतुर्दशपूर्वी श्रुतधर मुनि को भी किसी दृष्टि से केवली कहा जाता है। उनके द्वारा की जाने वाली आराधना कैवलिकी आराधना होती है। धार्मिकी आराधना सबकी समान हो, यह जरूरी नहीं। आराधना आराधना में तारतम्य हो सकता है।

सामान्य धर्म की सात बातें हैं--

१. पात्रदान- पात्र में दान देना। शुद्ध साधु को सुपात्र देना।

२. गुरु-विनय- जो गुरु हैं, धर्माचार्य हैं, पूजनीय हैं उनके प्रति विनय का भाव रखना। अपने गुरु के प्रति विनय का भाव रखना।

३. सर्वसत्वानुकंपा- सभी प्राणियों के प्रति दया रखना। किसी प्राणी को मेरी ओर से कष्ट न हो, ऐसी अनुकंपा रखना।

४. न्याय्यवृत्ति- न्याय के पथ से विचलित नहीं होना।

५. परहित रुचि-सदा दूसरों का हित हो, ऐसी रुचि रखना।

६. अनहंकार- अहंकार नहीं करना। भले सत्ता मिल जाए, धन मिल जाए, और कुछ प्राप्त हो जाए, उसका घमंड नहीं करना।

७. सत्संगति- संतों और सज्जनों की संगति करना।

इन सात बिन्दुओं के माध्यम से सामान्य गृहस्थ भी अपने जीवन में धर्माचरण कर सकता है और अपने जीवन का कल्याण कर सकता है।

धर्म के प्रति श्रद्धा का भाव स्थायी रहना चाहिए। उसे कभी छोड़ना नहीं चाहिए। कष्टों के समय में भी धर्म की श्रद्धा को नहीं छोड़ना चाहिए। धार्मिक श्रद्धा वस्त्र की तरह नहीं होती, जिसे जब चाहा तब पहन लिया और जब चाहा तब उतार दिया। धर्म को छोड़ दिया तो अगले जन्म में साथ क्या जाएगा? जीवन के अंतिम श्वास तक धर्म की श्रद्धा साथ रहनी चाहिए।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने आगमाधारित प्रवचन के उपरान्त मुनिपत व्याख्यान शृंखला के क्रम को आगे बढ़ाया।

आज भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्यमंत्री श्री विजय सांपला पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ उपस्थित हुए। आचार्यप्रवर ने उन्हें अहिंसा यात्रा के विषय में जानकारी प्रदान की तो वे बोले--'यह संयोग ही है कि आपने ९ नवम्बर २०१४ को अहिंसा यात्रा का प्रारम्भ किया और मैं भी उसी दिन मंत्री बना। मैं अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्पों का अक्षरशः पालन करता हूं। गुरुजी! आपकी यह यात्रा अपने आप में बहुत बड़ी तपस्या है।'

आचार्यप्रवर--'राजनीति में भी नैतिक मूल्यवत्ता बनी रहे और जनता में भी नैतिक मूल्यों का प्रसार हो तो देश अच्छा बन सकता है।'

श्री सांपला--'मैं इसका पूरा प्रयास करता हूं।'

आचार्यप्रवर--'राष्ट्र में कई पार्टियां हैं, उनका अपना महत्त्व है, किन्तु पार्टी से ऊपर राष्ट्रहित होना चाहिए।'

श्री सांपला--'आचार्यजी! आपने बिल्कुल सही कहा--'पहले राष्ट्र, फिर दल और फिर व्यक्ति।

आचार्यप्रवर (पावन आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा)--'खूब अच्छा रहे, अच्छा कार्य चलता रहे।'

श्री सांपला ने पूज्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण कर और सविनय वंदन कर अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान किया।

संयम में स्थिर करने वाला होता है बड़ा उपकारी

२४ अगस्त। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित प्रवचन शृंखला को आगे बढ़ाते हुए कहा--'धार्मिकी आराधना दो प्रकार की होती है--श्रुत धर्माराधना और चारित्र धर्माराधना। चारित्र धर्म की आराधना के लिए श्रुत अर्थात् ज्ञान तो होना ही चाहिए, चारित्र धर्म की प्राप्ति के बाद तो और ज्यादा विशेषतया श्रुताराधना करनी चाहिए। आध्यात्मिक ज्ञान की निर्मलता के कारण चारित्र की निर्मलता वृद्धिंगत हो सकती है। आगम स्वाध्याय के द्वारा श्रुत की आराधना हो सकती है। वाचना, प्रच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा और धर्मकथा-- ये स्वाध्याय के पांच प्रकार हैं।

आगम वाङ्मय में ग्यारह अंग हैं, बारह उपांग हैं, चार मूल हैं, चार छेद हैं और एक आवश्यक है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ में बत्तीस आगम प्रमाण रूप में माने गए हैं। उनमें ग्यारह अंग तो स्वतः प्रमाण के रूप में प्रतिष्ठित हैं। अन्य आगम परतः प्रमाण हैं, क्योंकि उनमें अंगों से मिलती हुई बातें हैं, इसलिए वे भी प्रमाण हो जाते हैं।

चारित्र धर्म की आराधना के लिए त्याग-प्रत्याख्यान आवश्यक होता है। अनगार साधु महाव्रत रूप

चारित्र धर्म का पालन करने वाले होते हैं। साधु बनने के बाद भी किसी-किसी के मन में विचलन की स्थिति पैदा हो सकती है, संयम छोड़ने का मन हो सकता है। दसवेआलियं की चूलिका में निर्दिष्ट अठारह स्थानों तथा उसके अन्य श्लोकों के आलंबन से मन पुनः स्थिर हो सकता है। साधु जीवन को छोड़कर गार्हस्थ्य में जाने वाले व्यक्ति को पश्चाताप करना पड़ सकता है। अस्थिर साधु हो या श्रावक, उसे यथार्थ के आधार पर स्थिर करने वाला बड़ा उपकारी होता है।'

पूज्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित प्रवचन शृंखला के पश्चात् मुनिपत के व्याख्यान का वाचन किया।

इस अवसर पर पूज्यप्रवर ने श्री जयचंदलाल पुगलिया और श्री कुशलराज सेठिया को ३२, श्री केवलचंद नागसेठिया और श्रीमती वंदना भण्डारी को ३१ तथा श्रीमती चंद्रा मेहता को ३० की तपस्या का प्रत्याख्यान करवाया।

आज से पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में नमस्कार महामंत्र का सपाद कोटि जप तथा सवा लाख 'ऊँ भिक्षु' जप अनुष्ठान प्रारम्भ हुआ। पूज्यप्रवर ने इस संदर्भ में पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा--'नमस्कार महामंत्र सपाद कोटि जप के जपकों द्वारा जप का क्रम खूब अच्छे रूप में चले। भिक्षु स्मृति वाले लोग भी ऊँ भिक्षु, जय भिक्षु की अच्छी साधना करें।

आज भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के पूर्व मंत्री व पीएमके नेता श्री अम्बुमणि ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

संयम की संरक्षा साधु का पहला कर्त्तव्य

२५ अगस्त। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'कैवलिकी आराधना दो प्रकार की होती है--अंतक्रिया और कल्पविमनोपपत्तिका क्रिया। केवली के चार प्रकार होते हैं-अवधिज्ञानी केवली, मनःपर्यव ज्ञानी केवली, केवलज्ञानी केवली और श्रुत केवली। केवलज्ञानी केवली अंतक्रिया करने वाले होते हैं। वे जन्म-मरण का, सर्वकर्मों का अंत कर देते हैं। यह अंतक्रिया होती है। श्रुतकेवली, अवधिज्ञानी केवली और मनः पर्यवज्ञानी केवली आयुष्य पूर्ण कर वैमानिक देव गति में ही उपपन्न होते हैं। वे उस योग्य आराधना करने वाले होते हैं।'

हाजरी के संदर्भ में उपस्थित साधु-साध्वियों को विशेष रूप से लक्षित करते हुए आचार्यप्रवर ने कहा--'साधु का धर्म है कि अपने संयम की अच्छी आराधना करना। वह संयम जीवन का संरक्षण जितनी जागरूकता से करेगा, उसे उतना ही लाभ प्राप्त हो सकेगा। यदि वह साधु अजागरूक रहेगा तो उसके जीवन में दोषों का संग्रहण होता जाएगा। साधु का पहला कर्त्तव्य होता है अपने संयम की संरक्षा करना। पांच महाव्रतों, पांच समितियों और तीन गुप्तियों की अखंड आराधना हम सबके लिए अभिलषणीय है। समितियां, गुप्तियां शुद्ध रहती हैं तो महाव्रतों की रक्षा अच्छी हो सकती है। यदि समितियां-गुप्तियां मलिन होती हैं, खण्डित होती हैं तो महाव्रत भी कुछ शिथिल हो सकते हैं। साधु के जीवन में शिथिलता न आए। सम्यक्त्व और आचार के प्रति दृढ़ता रहे तो हमारी आत्मा अच्छी आराधना कर सकती है।

हर जगह ढीलापन काम का नहीं होता। कभी-कभी कहा जाता है कि जीवन में लचीलापन होना चाहिए, हर किसी बात को पकड़कर नहीं रखना चाहिए। व्यवहार में लचीलापन भी अच्छा हो सकता है, किन्तु कहीं-कहीं पकड़ भी अच्छी हो सकती है। हर बात में लचीलापन भी काम का नहीं होता। संयम के अनुपालन में लचीलापन न हो, दृढ़ता रखने का यथौचित्य प्रयास होना चाहिए। संयम पालन की जितनी दृढ़ता रहती है, उतना ही संयम अच्छा रहता है।

साधु को पांच महाव्रत, पांच समिति और तीन गुप्ति की पूंजी की सुरक्षा के प्रति जागरूक रहना

चाहिए। आदमी अच्छा कार्य करे। विज्ञापन, प्रचार-प्रसार आदि अपेक्षानुसार किया जा सकता है। अनपेक्षित विज्ञापन भी नहीं होना चाहिए। अपने अहं की पुष्टि के लिए दिखावे की भावना नहीं होनी चाहिए। अच्छा कार्य करने का लक्ष्य रहना चाहिए। आदमी जो अच्छी बात कह दे, उसे करने का लक्ष्य और प्रयास भी होना चाहिए। इस प्रकार साधु की कथनी और करनी में समानता रहनी चाहिए। कथनी-करनी की समानता साधना और व्यावहारिक निर्मलता की दृष्टि से भी अच्छी बात होती है।'

पूज्यप्रवर ने चतुर्दशी के संदर्भ में साधु-साध्वियों की उपस्थिति में 'हाजरी' का वाचन किया। तत्पश्चात् साधु-साध्वियों ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र समुच्चारित किया।

कार्यक्रम में पूर्व उपराष्ट्रपति श्री बी.डी. जत्ती के पुत्र तथा वासव समिति के अध्यक्ष श्री अरविन्द जत्ती ने राजस्थानी भाषा में अनूदित अपने ग्रंथ 'वचन' का लोकार्पण किया। इस संदर्भ में ओसवाल समिति बेंगलुरु के अध्यक्ष श्री रायचंद खटेड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

श्री अरविन्द जत्ती ने हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए कहा--'आज मैं परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण के दर्शन कर बहुत प्रसन्न हूं और स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूं। मुझे यही अनुभव होता था कि राजस्थानी भाषा में अनूदित 'वचन' ग्रंथ पर जब तक आचार्यश्री महाश्रमणजी के हाथों का स्पर्श न हो, तब तक यह अपूर्ण है। आज मुझे परम शांति का अनुभव हो रहा है कि आज इस ग्रंथ का विमोचन भी हुआ, आचार्यश्री के दर्शन करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ और चरणस्पर्श का भी लाभ प्राप्त हो गया। भारत सरकार बाहर की शुद्धि करने में लगी हुई है तो आचार्यजी लोगों की भीतरी शुद्धि का प्रयास कर रहे हैं। आप बेंगलुरु भी पधारने वाले हैं, यह जानकर मेरा रोम-रोम हर्षित है। मेरे पिताश्री बी.डी. जत्ती आचार्य तुलसी के शिष्य थे और मैं आपका शिष्य बनकर जीना चाहता हूं।'

'वचन' ग्रंथ के संदर्भ में परम पूज्य आचार्यप्रवर ने कहा--'वचन ग्रंथ लोकार्पित किया गया है और विभिन्न भाषाओं में इसके अनुवाद की बात सामने आई है। राजस्थानी भाषा में भी इसका अनुवाद हुआ है। वचनों में कई वचन ऐसे होते हैं, जो प्रेरणा देने वाले हो सकते हैं। 'वचन' ग्रंथ भीतर को बेध दे, कोई अच्छी प्रेरणा दे दे तो इसका निर्माण और अधिक सार्थक हो सकेगा। पूज्यप्रवर ने करीब ४२ वर्षों पूर्व पूर्व उपराष्ट्रपति श्री बी.डी. जत्ती की आचार्य तुलसी से लाडनूं में हुई भेंट का भी स्मरण किया। तदुपरान्त आचार्यप्रवर ने कहा--'अरविन्दजी जत्ती बी.डी. जत्तीजी के सुपुत्र हैं। खूब अच्छा ज्ञान का आराधन हो और जनता में भी खूब धर्म का प्रचार हो, ऐसा यथासंभव प्रयास चलता रहे, मंगलकामना।'

कार्यक्रम के दौरान इनकम टेक्स डिपार्टमेंट के अंतर्गत चेन्नई के एडिशनल कमिश्नर श्री नंदाकुमारजी ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

अध्यात्म जगत के सर्वोच्च नेता होते हैं तीर्थंकर

२६ अगस्त। परम पावन आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'प्रत्येक अवसर्पिणिकाल में और प्रत्येक उत्सर्पिणिकाल में चौबीस-चौबीस तीर्थंकर होते हैं। एक कालचक्र में बारह अर होते हैं। छह अर अवसर्पिणिकाल में और छह अर उत्सर्पिणिकाल में। यह अवसर्पिणि और उत्सर्पिणि का क्रम चलता रहता है। आज तक अनंतानंत अवसर्पिणिकाल और उत्सर्पिणि काल बीत चुके हैं और आगे भी अनंत-अनंत अवसर्पिणि काल और उत्सर्पिणि काल बीतने वाले हैं।

वर्तमान में अवसर्पिणिकाल चल रहा है। इस काल में क्रमशः आगे से आगे ह्रास होता है। जैसे मनुष्यों का आयुष्य धीरे-धीरे कम होता चला जाता है। पहले अर में यानी यौगलिक युग में मनुष्यों का आयुष्य तीन पल्योपम तक का होता था। यह गणनातीत काल है। करोड़ों, अरबों, खरबों वर्षों से भी ज्यादा आयुष्य

एक मनुष्य का होता था। प्रथम अर के बाद दूसरे अर में आयुष्य कुछ कम हुआ। इसी प्रकार क्रमशः तीसरे और चौथे अर में आयुष्य और भी कम हो गया। वर्तमान में अवसर्पिणीकाल का पांचवां 'दुःषम' अर चल रहा है। उसमें मनुष्यों का आयुष्य सामान्यतया सौ-सवा सौ वर्षों से ज्यादा नहीं दिखाई देता। सौ वर्षों से पार जाने वाले भी कम ही मनुष्य होते हैं। ज्यादातर मनुष्य सौ वर्ष पूरे होने से पहले-पहले ही चले जाते हैं। पांचवें अर की समाप्ति के आसपास आयुष्य और कम हो जाएगा। उस समय बीस वर्षों का आयुष्य भी बहुत लंबा आयुष्य माना जाएगा। छठे अर में तो आयुष्य और भी कम हो जाएगा। उसमें तो सोलह वर्ष भी बहुत होंगे। इस प्रकार अवसर्पिणिकाल में आयुष्य की लंबाई धीरे-धीरे कम होती जाती है।

इसी तरह आदमी की अवगाहना अर्थात् शरीर की लंबाई भी धीरे-धीरे कम होती जाती है। प्रथम अर में यौगलिक थे, उनकी लम्बाई तीन कोस लंबी होती थी। दूसरे अर में वह लम्बाई कुछ कम हुई। क्रमशः तीसरे व चौथे अर में और कम हुई। पांचवें अर में मनुष्य की लम्बाई कितनी कम हो गई। छठे अर में तो अवगाहना और भी कम होगी, मानों बड़े आदमी का शरीर भी बच्चे जैसा होगा। इस प्रकार अवसर्पिणि काल में अवगाहना का भी ह्रास होता जा रहा है।

हम चौथे अर की तुलना में देखें तो पांचवें अर में ज्ञान की भी कमी आ गई है। एक समय था जब केवलज्ञानी होते थे, तीर्थंकर होते थे, किन्तु आज हमारे इस भरत क्षेत्र में कोई केवलज्ञानी साधु नहीं है। इस प्रकार ज्ञान में मंदता आई है। हमारी दुनिया से वर्तमान में कोई मोक्ष नहीं जा सकता अर्थात् एक दृष्टि से साधना की भी मंदता आई है। पहले सूक्ष्मसंपराय चारित्र और यथाख्यात चारित्र वाले साधु होते थे, आज कोई ऐसा साधु दिखाई नहीं दे रहा है। जिनमें ये दोनों चारित्र हों। इस प्रकार चारित्र का भी कितना मान्द्य आ गया है।

इस अवसर्पिणिकाल में एक समय ऐसा भी आएगा जब साधु संस्था भी समाप्त हो जाएगी। यह अवसर्पिणिकाल में ह्रास की बात है। उत्सर्पिणिकाल में क्रमशः विकास होता है। उस दौरान हमारी भूमि पर पुनः तीर्थंकर पैदा होने लग जाएंगे। इस प्रकार अवसर्पिणि और उत्सर्पिणि कालचक्र में ह्रास-विकास होता रहता है।

भरत क्षेत्र में जहां हम रहते हैं, वह जम्बूद्वीप में स्थित है। 'जम्बूद्वीप' अठाईद्वीप वाले मनुष्य क्षेत्र का सर्वाभ्यांतर द्वीप है। जम्बूद्वीप के चारों ओर वलयाकार में लवण समुद्र है, फिर आगे धातकी खण्ड है, फिर आगे कालोदधि समुद्र है और उससे आगे अर्द्धपुष्कर द्वीप है। इस प्रकार तिर्यकलोक में असंख्य द्वीप और समुद्र हैं। इस जम्बूद्वीप में एक भरत क्षेत्र, एक ऐरावत और एक महाविदेह क्षेत्र है। धातकी खण्ड में ये तीनों दो-दो हैं। अर्थात् छह क्षेत्र हैं। अर्द्धपुष्कर द्वीप में भी इस प्रकार छह क्षेत्र हैं। इस प्रकार कुल पन्द्रह क्षेत्र, पन्द्रह कर्मभूमियां हैं। इन पन्द्रह क्षेत्रों में तीर्थंकर होते हैं। महाविदेह में हमेशा कोई न कोई तीर्थंकर विद्यमान रहता ही है।

कम से कम बीस तीर्थंकर दुनिया में हर समय रहते हैं। सीमंधरस्वामी आदि वर्तमान में तीर्थंकर हैं। भरत क्षेत्र और ऐरावत क्षेत्र में हर अवसर्पिणिकाल में चौबीस-चौबीस और हर उत्सर्पिणिकाल में चौबीस-चौबीस तीर्थंकर होते हैं। हमारे इस भरत क्षेत्र में वर्तमान अवसर्पिणि के चौबीस तीर्थंकर हो चुके हैं। उन चौबीस तीर्थंकरों में भगवान ऋषभ पहले और भगवान महावीर अंतिम थे। बाईस तीर्थंकर बीच में हुए।

'ठाणं' आगम में दो तीर्थंकरों का नामोल्लेख किया गया है--बीसवें तीर्थंकर मुनिसुव्रत भगवान और बाईसवें तीर्थंकर अरिष्टनेमि भगवान। यह उल्लेख इसलिए किया गया है कि इन दोनों तीर्थंकरों के शरीरों का वर्ण समान था। दोनों के शरीरों का वर्णन नीलोत्पल के समान अर्थात् नील था।

अधिकतम १७० तीर्थंकर एक साथ एक समय में हो सकते हैं। उनमें से १६० तीर्थंकर तो महाविदेहों में हो सकते हैं। पांच महाविदेह क्षेत्र हैं। एक महाविदेह में बत्तीस विजय होती है। हर विजय में एक-एक

तीर्थंकर हों तो १६० तीर्थंकर हो जाते हैं। हर भरत क्षेत्र और हर ऐरावत क्षेत्र में तीर्थंकर हों तो कुल १७० तीर्थंकर एक साथ हो सकते हैं।

तीर्थंकर अध्यात्म जगत् के सर्वोच्च नेता होते हैं। वे संपूर्ण ज्ञान से सम्पन्न होते हैं, तीर्थ की स्थापना करने वाले होते हैं और अध्यात्म के अधिकृत प्रवचनकार होते हैं। केवलज्ञानी तो और भी साधु हो सकते हैं, किन्तु तीर्थंकरों जैसे अतिशय हर केवलज्ञानी में नहीं होते। तीर्थंकर चौंतीस अतिशयों और पैंतीस वचनातिशयों से सम्पन्न होते हैं। चार घातीकर्मों (ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अंतराय) का नाश कर चुके होते हैं।

विवाह मंडप के निकट जाकर लौट गए अरिष्टनेमि

अरिष्टनेमि ऐसे तीर्थंकर थे, जिनके गृहस्थ जीवन से भी अहिंसा की प्रेरणा ली जा सकती है। अरिष्टनेमि को नेमिनाथ भी कहा जाता है। वे सोरियपुर के समुद्रविजय महाराज के सुपुत्र थे। श्रीकृष्ण ने सोचा कि अरिष्टनेमि भी शक्तिशाली है। कहीं यह मेरी सत्ता हथिया न ले, इसकी शक्ति को कोई दूसरी दिशा दी जानी चाहिए। इसके लिए उन्होंने अरिष्टनेमि के विवाह की योजना बनाई। अंतःपुर की रानियों को आदेश दिया कि तुम अरिष्टनेमि को शादी के लिए तैयार करो। प्रयास के द्वारा अरिष्टनेमि से शादी की स्वीकृति प्राप्त कर ली गई। शादी के लिए सत्यभामा की बहन राजीमती के नाम का प्रस्ताव आया और अरिष्टनेमि के लिए उसे योग्य जानकर अरिष्टनेमि की शादी उसके साथ करना निश्चित कर दिया गया। अरिष्टनेमि की बारात चली। विवाह मंडप के निकट अरिष्टनेमि को पशु-पक्षियों की चीत्कार सुनाई दी तो उन्होंने सोचा--'भय की चीत्कार कहां से आ रही है?' उन्होंने सारथि से इस विषय में पूछा तो वह बोला कि कुमारप्रवर! यह चीत्कार आपके कारण से आ रही है। आपकी शादी में बारातियों को भोजन चाहिएगा तो मांसाहार तैयार करने के लिए पिंजरों में पक्षी और बाड़ों में पशु एकत्रित किए गए हैं, इनका भोजन बनेगा। पशु-पक्षियों ने जाना कि बारात आ रही है, इसका अर्थ है उनकी मौत निकट आ रही है। अपनी मौत के भय से वे चीत्कार कर रहे हैं।'

यह बात अरिष्टनेमि ने सुनी तो उनका हृदय कांप उठा कि हमारी शादी के लिए इतने पशु-पक्षियों का संहार होने वाला है। ऐसा विवाह मुझे नहीं चाहिए, जिसमें इतने निरीह पंचेन्द्रिय प्राणियों का वध होने वाला है। अरिष्टनेमि के भीतर ऐसा संवेग जागा कि वे लौटने के लिए मुड़ गए। वे लौटने लगे तो श्रीकृष्ण, उग्रसेन आदि आए और उनको विवाह के लिए समझाने लगे। अरिष्टनेमि ने उसके लिए स्पष्ट मना कर दिया। इस प्रकार अरिष्टनेमि विवाह मंडप के निकट जाकर भी लौट गए।

उन्होंने अनुकंपा का बड़ा उदाहरण प्रस्तुत करते हुए आयोजित शादी को भी ठुकरा दिया। यह उनका पौरुष था, त्याग था। उधर राजीमती प्रतीक्षा कर रही थी। उन्होंने जब यह सुना कि अरिष्टनेमि लौट गए तो वह दुःखी हुई, किन्तु बाद में उन्होंने भी संयम स्वीकार कर लिया।

वर्तमान जैन समाज के युवक, किशोर भी यह ध्यान दें कि वे होटल में ठहरें या हॉस्टल में, देश में रहें या विदेश में मांसाहार से बचने का प्रयास करें। अंडा और मांस का भोजन न हो। पता चले कि यह भोजन मांसाहारी है तो उसे अस्वीकृत करने का मनोभाव रहना चाहिए और उसे उस समय अभिव्यक्त भी करना चाहिए।'

रक्षाबन्धन से भाई-बहन लें आत्मरक्षा की प्रेरणा

पूज्यप्रवर ने रक्षाबन्धन के संदर्भ में कहा--'आज श्रावणी पूर्णिमा है। रक्षाबन्धन का प्रसंग है। राखी

की परंपरा चल रही है। यह भाई-बहनों के संबंध को अभिव्यक्त करने का भी अवसर है। यह त्यौहार राखी बांधने, उपहार देने आदि के रूप में चलता होगा। इससे पारिवारिक संबंधों को मजबूती भी मिल सकती है। इस निमित्त से भाई-बहनों का मिलना हो जाता है। बहनें भाई के राखी बांधने के लिए कहां-कहां जाती हैं। इस अवसर पर पीहर के लोगों से मिलना हो जाता है। इस प्रकार यह पारिवारिक स्नेह-संबंध का एक उपक्रम है। व्यवहार में संबंध भी चलते हैं। एक दूसरे की रक्षा की बात भी होती है। कुछ उसमें भी वास्तविकता खोजी जा सकती है, किन्तु हम अपनी आत्मा की रक्षा करें। पाप आचरणों से भाई भी अपनी आत्मा की रक्षा करें और बहनें भी अपनी आत्मा की रक्षा करें। इस प्रकार आत्मरक्षा की प्रेरणा प्राप्त हो तो यह रक्षाबन्धन का त्यौहार आध्यात्मिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण हो सकता है।'

पूज्यप्रवर ने आगमाधारित प्रवचन के पश्चात् मुनिपत के व्याख्यान का भी वाचन किया। सुश्री कोमल बोहरा ने मासखमण का प्रत्याख्यान किया।

पुरुषादानीय महापुरुष थे भगवान पार्श्व

२७ अगस्त। परम पावन आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने मंगल प्रवचन में कहा--'कई तीर्थंकरों के शरीरों के वर्ण समान हैं तो कई तीर्थंकरों की कई तीर्थंकरों से वर्ण की दृष्टि से असमानता भी है। वर्तमान अवसर्पिणी के चौबीस तीर्थंकरों में से दो तीर्थंकर श्याम वर्ण वाले थे। उन्नीसवें भगवान मल्लिनाथ और तेईसवें भगवान पार्श्वनाथ श्यामवर्ण के थे। शरीर का अपना-अपना वर्ण होता है। श्यामवर्ण का व्यक्ति भी महान हो सकता है। भगवान मल्लिनाथ का शरीर श्यामवर्ण का था।

भगवान पार्श्वनाथ जो पुरुषादानीय के रूप में उल्लिखित हुए, श्यामवर्ण के थे। भगवान पार्श्वनाथ वाराणसी के राजा अश्वसेन के पुत्र थे। एक बार उन्होंने महल के झरोखे में से देखा कि लोगों के झुंड के झुंड एक ही दिशा में जा रहे हैं। जिज्ञासा की तो उन्हें जानकारी मिली कि आज कोई उत्सव नहीं है। एक तापस आया हुआ है, जिसका नाम है कमठ। जनता उसकी तपस्या से प्रभावित होकर उसके प्रति श्रद्धार्पण करने के लिए उसके पास जा रही है।

तपस्या का अपना प्रभाव होता है। कोई व्यक्ति तपस्या करता है तो उसकी तपस्या से लोग आकर्षित भी होते हैं। तपस्या एक ऐसा उपाय है जिसके द्वारा कर्मों की निर्जरा होती है। कितने-कितने जन्मों के संचित कर्म तपस्या से कट जाते हैं। साथ में तपस्या से कुछ लब्धि, सिद्धि भी प्राप्त हो सकती है। तेजो लब्धि की प्राप्ति में भी तपस्या की आवश्यकता होती है। तपस्या से, साधना से तेजोलेश्या वाली लब्धि प्राप्त हो सकती है। अध्यात्म के संदर्भ में तपस्या का मूल उद्देश्य कर्म निर्जरा ही होना चाहिए।

कुमार पार्श्व अवधिज्ञान सम्पन्न थे। तीर्थंकर गृहस्थावस्था में भी अवधिज्ञान सम्पन्न होते हैं। पार्श्वकुमार ने अपने अतीन्द्रिय ज्ञान का उपयोग करते हुए देखा कि तापस पंचाग्नि तप कर रहा है। चारों ओर आग और एक ओर सूर्य का आतप-इस प्रकार पांच प्रकार के ताप को सहन कर रहा है। यह एक कठोर साधना है। वैशाख, ज्येष्ठ मास, जिसमें सूर्य का आतप प्रखर हो, में पंचाग्नि तप करना एक कठोर तपस्या मानी जा सकती है। कुमार पार्श्व ने अवधिज्ञान से देखा कि पंचाग्नि तप के लिए लगाई अग्नि के बीच एक लकड़े में नाग-नागिन का जोड़ा झुलस रहा है, उसका उद्धार करना चाहिए।

राजकुमार पार्श्व कमठ तापस के तपःस्थल पर आए और तापस से बोले कि तापसजी! आपके इन लकड़ों के बीच नाग-नागिन का जोड़ा भी झुलस रहा है। राजकुमार के निर्देश से उस लकड़े को अग्नि से अलग कर उसे चीरा गया तो उसमें से एक नाग और एक नागिन निकले। वे कुछ तो जल चुके थे। राजकुमार पार्श्व ने उस नाग-नागिन के जोड़े को नमस्कार महामंत्र सुनाया।

अंत समय में परिणाम अच्छे रहें तो अगली गति अच्छी हो सकती है। अंतिम समय में जैसी लेश्या होती है उसी लेश्या में आगे उत्पत्ति होती है। कोई अंतिम समय में हो तो उसे अच्छा पाठ सुनाया जाए या उसे अच्छी प्रेरणा दी जाए तो उसके परिणाम अच्छे हो सकते हैं। इसीलिए कोई संथारा कर रहा हो तो उसे चौबीसी, आराधना, नमस्कार महामंत्र आदि सुनाना चाहिए, ताकि उसके परिणाम अच्छे रहें। अंतिम समय में तो विशेषतया परिणाम अच्छे रहें, ऐसा प्रयास होना चाहिए।

नाग और नागिन ने प्राण छोड़े और वे देवगति में भवनपति में पैदा हुए। वे वर्तमान में धरणेन्द्र-पद्मावती के रूप में प्रसिद्ध हैं। यह अहिंसा की बात राजकुमार पार्श्व ने प्रस्तुत की। तपस्या के साथ भी हिंसा न हो। राजकुमार पार्श्व के योग से नाग-नागिन का मानों उद्धार हुआ। आज भगवान पार्श्व का नाम कितना लिया जाता है, कितने मंत्र, स्तोत्र भगवान पार्श्व से जुड़े हुए हैं। साथ में धरणेन्द्र-पद्मावती का नाम भी आता है। भगवान पार्श्व के कितने मंदिर मिलते हैं, हो सकता है कि उसके पीछे लोगों की लौकिक कामना भी काम करती हो।

भगवान पार्श्व एक लोकप्रिय तीर्थंकर के रूप में प्रतीत हो रहे हैं। उनका जीवनकाल करीब १०० वर्षों का रहा। उनकी जन्मतिथि पौष कृष्णा दसमी पार्श्व जयंती के रूप में मनाई जाती है। भगवान पार्श्व से जुड़ा हुआ जप, अनुष्ठान आदि करने वाले कई लोग पौष कृष्णा दसमी से उस जप, अनुष्ठान आदि का प्रारम्भ करने वाले हो सकते हैं। कई लोग पार्श्व जयंती पर उपवास करने वाले हो सकते हैं। भगवान पार्श्व के जीवन में साधना थी, तपस्या थी। उनके सामने उपसर्ग आए, कठिनाईयां भी आईं। कहा जाता है कि धरणेन्द्र कष्ट की परिस्थितियों में प्रभु पार्श्व की सेवा में रहे। यह संसार है, इसमें कोई कष्ट देने का प्रयास करता है तो कोई कष्ट हरण का प्रयास करने वाला भी मिल सकता है।

भगवान पार्श्वनाथ तीर्थंकर थे। दुनिया में तीर्थंकर से बड़ा कोई ज्ञानी नहीं हो सकता, उनसे बड़ा कोई वीतराग नहीं हो सकता और उनसे बढ़कर अध्यात्म का प्रवक्ता भी नहीं हो सकता। भगवान पार्श्व की स्तुति में रचित 'कल्याण मंदिर' स्तोत्र प्रसिद्धि को प्राप्त है। 'उवसग्गहर' स्तोत्र का तो लोग कितनी बार पाठ करते होंगे। वह भी एक सुन्दर स्तोत्र है। कष्ट-संकट के समय में भी इसका पाठ किया जा सकता है। इससे भी परम बात यह है कि कर्म निर्जरा के लिए आत्मशुद्धि के लिए भगवान पार्श्व जैसे महापुरुष का श्रद्धा के साथ स्मरण करना।'

पूज्यप्रवर ने आगमाधारित प्रवचन के पश्चात् मुनिपत के व्याख्यान का वाचन किया।

तीर्थंकर पद्मप्रभस्वामी के नाम से लें अनासक्ति की संप्रेरणा

२८ अगस्त। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित प्रवचन शृंखला को आगे बढ़ाते हुए कहा--'तीर्थंकर अध्यात्म सिद्धांत के प्रवक्ता होते हैं, अर्हत होते हैं। पंच परमेष्ठी में प्रथम पद पर विराजमान होते हैं। वे चार घातीकर्मों का नाश कर चुके होते हैं। निर्मलता की दृष्टि से, कर्म मुक्ति की दृष्टि से सिद्ध बड़े हैं, उच्च हैं, फिर भी अर्हत प्रथम स्थान पर विराजमान हैं। अर्हत अध्यात्म जगत का अधिनेतृत्व करने वाले, दुनिया को बोध देने वाले होते हैं और सिद्धात्माओं के विषय में भी ज्ञान अर्हतों से मिलता है। इस संदर्भ में अर्हतों का अधिक महत्त्व हो जाता है, इसलिए उनका प्रथम स्थान है।

चौबीस तीर्थंकरों में दो तीर्थंकर पद्म के समान लालवर्ण वाले थे। छठे तीर्थंकर पद्मप्रभु और बारहवें तीर्थंकर वासुपूज्यप्रभु।

भगवान पद्मप्रभ स्वामी ने एक माह के अनशन के बाद ३०८ मुनियों के साथ सम्मेत शिखर पर शरीर को त्याग कर निर्वाण को प्राप्त किया। बीस तीर्थंकरों की निर्वाण भूमि सम्मेत शिखर बतलाई गई है।

पद्मप्रभस्वामी भी सम्मेत शिखर पर निर्वाण को प्राप्त करने वाले तीर्थंकरों में से एक हैं। बारहवें तीर्थंकर वासुपूज्य भगवान चंपापुरी से जुड़े हुए थे। उन्होंने चंपापुरी में ६०० मुनियों के साथ अनशन किया। उन्हें एक माह का अनशन आया और वे सिद्ध बन गए।

तीर्थंकर आते हैं, दुनिया को राह दिखाते हैं, साधना की चाह जगाते हैं और अपने कार्यकाल की सम्पन्नता के बाद आखिर वे मोक्ष को प्राप्त हो जाते हैं। यह दुनिया का सौभाग्य है कि इस दुनिया में तीर्थकर पैदा होते रहते हैं। वे केवलज्ञानी बनते हैं, तीर्थंकर बनते हैं, तीर्थ की स्थापना करते हैं, कितने जीवों का उद्धार करते हैं और एक दिन वे स्वयं मोक्ष को प्राप्त हो जाते हैं। दुनिया तीर्थंकरों से कभी खाली नहीं होती। वर्तमान में यह सौभाग्य हमारे इस भरत क्षेत्र को प्राप्त नहीं है, किन्तु महाविदेह की अनेक-अनेक भूमियां तीर्थंकरों से संपृक्त हैं, जहां तीर्थंकर देव विराजमान हैं।

अनासक्ति के संदर्भ में पद्म का उदाहरण दिया गया है कि जैसे पद्म पानी में रहकर भी उससे अलिप्त रहता है, उसी प्रकार साधक संसार में रहते हुए भी उससे अलिप्त रहे। अध्यात्म के क्षेत्र में अनासक्ति का बड़ा महत्त्व है। आसक्ति आदमी को डुबोने वाली होती है। अनासक्ति के कारण आदमी ऊपर उठता है। गृहस्थ जीवन में भी अनासक्ति की साधना होनी चाहिए। परिवार में जीते हुए भी अनासक्ति को विकसित बनाने का यथासंभव प्रयास करना चाहिए। मृत्यु का स्मरण करने से, अनित्यता की अनुप्रेक्षा करने से अनासक्ति की चेतना विकसित हो सकती है। अनित्यता के गीत आदि इसलिए महत्त्वपूर्ण हैं कि उन्हें गाने वालों और सुनने वालों में अनासक्ति का भाव पुष्ट हो सकता है। आसक्ति आदमी को पतन की ओर ले जाती है। भगवान पद्मप्रभ स्वामी के नाम से भी अनासक्ति की चेतना को विकसित बनाने की प्रेरणा ली जा सकती है।'

पूज्यप्रवर ने आगमाधारित प्रवचन के पश्चात् मुनिपत के व्याख्यान का वाचन किया।

अष्टदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर परिसम्पन्न

परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में जैन विश्व भारती के प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा आयोजित अष्टदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आज समापन हुआ। इस संदर्भ में पूज्यप्रवर ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा--'प्रेक्षाध्यान शिविर का समापन होने जा रहा है। इतने शिविरार्थियों ने भाग लिया। प्रेक्षाध्यान की साधना वीतरागता की दिशा में आगे बढ़ाने वाली सिद्ध हो। शिविर के बाद भी जितना संभव हो, संवर-निर्जरा की साधना चलती रहे। स्वाध्याय, ध्यान आदि की साधना चलती रहे। प्रेक्षाध्यान शिविर के साधक शिविरकाल की संपन्नता के बाद भी जितना संभव हो सके, अपनी साधना को पुष्ट करने का प्रयास करते रहें।'

इस अवसर पर प्रेक्षा प्रशिक्षक श्री माणकचंद रांका ने अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की। शिविरार्थी श्री अर्जुन कोठारी तथा अंजलि सिंघवी ने अपने शिविरकालीन अनुभवों को प्रस्तुति दी।

नमस्कार महामंत्र पर आधारित अष्टदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर में १०५ व्यक्ति संभागी बने। शिविरार्थियों को आचार्यप्रवर ने स्वयं ध्यान के प्रयोग करवाए। शिविर के दौरान अधिकांश प्रयोग आचार्यप्रवर की वाणी में की गई ऑडियो रिकॉडिंग के आधार पर करवाए गए। इसके सिवाय शिविरार्थी पुरुषों को मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि जितेन्द्रकुमारजी तथा मुनि अनेकांतकुमारजी और शिविरार्थी बहनों को साध्वी शुभ्रयशाजी, साध्वी शशिप्रभाजी, साध्वी आस्थाश्रीजी, साध्वी दर्शनविभाजी, साध्वी परमप्रभाजी, साध्वी आरोग्यश्रीजी, साध्वी मीमांसाप्रभाजी एवं समणी रत्नप्रज्ञाजी ने प्रशिक्षण दिया। प्रेक्षा प्रशिक्षक श्री माणकचंद रांका तथा विजया छल्लाणी का भी प्रशिक्षण कार्य में सहयोग रहा।

चन्द्रमा से शीतलता, निर्मलता और प्रकाशवत्ता की प्रेरणा प्राप्त करें

२६ अगस्त। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'दो तीर्थंकर चन्द्र के समान गौरवर्ण के हुए--आठवें तीर्थंकर चन्द्रप्रभस्वामी और नवमें तीर्थंकर सुविधिनाथ भगवान। सुविधिनाथ भगवान के दो नाम हैं-सुविधि और पुष्पदंत। चन्द्रमा हमारी सृष्टि में ऐसा तत्त्व है, जिसमें तीन विशेषताएं देखी जा सकती हैं--

१. शीतलता- चांद शीतल होता है। उसकी चांदनी कितनी सुहावनी लगती है। चन्द्रमा से गुस्से से मुक्त रहने की, शांति की प्रेरणा प्राप्त की जा सकती है। प्रेक्षाध्यान के अंतर्गत ज्योतिकेन्द्र पर चन्द्रमा के साक्षात्कार का एक प्रयोग है। यह प्रयोग गुस्से को शांत करने की दृष्टि से भी निर्दिष्ट किया जाता है।

२. निर्मलता- लोगस्स में कहा गया है--चंदेसु निम्मलयरा' सिद्ध चन्द्रमाओं से भी निर्मलतर होते हैं। चन्द्रमा में भी निर्मलता होती है। निर्मलता की प्रेरणा भी चन्द्रमा से प्राप्त की जा सकती है। चांद की कलाएं घटती-बढ़ती रहती हैं। वे कृष्णपक्ष में हीयमान रहती हैं और शुक्लपक्ष में वर्धमान होते-होते पराकाष्ठा तक पहुंच जाती हैं। चन्द्रमा की कलाएं कृष्णपक्ष से अंधेरे की ओर तथा शुक्ल पक्ष में उजाले की ओर बढ़ती हैं। चन्द्रमा की निर्मलता से आसक्ति की मलिनता से बचने की प्रेरणा प्राप्त की जा सकती है। जो व्यक्ति आसक्ति के पंक में फंस जाता है, उसकी दुर्गति हो सकती है। जैसे धायमाता बच्चे का लालन-पालन करते हुए भी मन में यह जानती है कि बच्चा मेरा नहीं है, वैसे ही सम्यक् दृष्टि मनुष्य को परिवार का भरण-पोषण करते हुए भी अनासक्त रहना चाहिए। श्रावक को यह सोचना चाहिए कि ज्ञान, दर्शन से संयुक्त आत्मा मेरी है, बाकी सब संयोग लक्षण वाले हैं। जिसका संयोग होता है, उसका वियोग भी हो जाता है।

३. प्रकाशवत्ता- चन्द्रमा की चांदनी में प्रकाश होता है। प्रकाश अपने आप में महत्त्वपूर्ण होता है। प्रकाश तो अग्नि में भी होता है, किन्तु उसमें उष्णता होती है। चन्द्रमा का प्रकाश शीतलतायुक्त होता है। जिस प्रकार चन्द्रमा स्वयं प्रकाशित होता है और अपने प्रकाश से दूसरों को भी प्रकाशित करता है, उसी प्रकार हम स्वयं को ज्ञान से आलोकित करने और दूसरों को भी ज्ञान आलोक बांटने का प्रयास करें।

छह लेश्याओं का वर्णन जैन वाङ्मय में प्राप्त होता है। पच्चीस बोल के सतरहवें बोल में कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या, तेजो लेश्या, पद्म लेश्या और शुक्ल लेश्या--इन छह लेश्याओं का उल्लेख है। हम अपने जीवन में शुक्ल लेश्या में रहने का प्रयास करें। शुक्ल लेश्या और शुक्ल ध्यान। शुक्ल ध्यान बहुत ही ऊंची साधना है। महान संत पुरुष उच्च कोटि की भूमिका पर आरूढ़ महापुरुष शुक्ल ध्यान करने वाले होते हैं। हमारी आत्मा में शुक्लता बढ़े, निर्मलता बढ़े, हम शुक्ल लेश्या में रहें और हमारे परिणाम पवित्र रहें।'

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने आगमाधारित पावन प्रवचन के पश्चात् मुनिपत के व्याख्यान का वाचन किया।

मुनि देवार्यकुमारजी तथा साध्वी सन्मतिप्रभाजी के संसारपक्षीय पिता भुसावल निवासी श्री चंपालाल कोटेचा ने पूज्यप्रवर से ५१ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बी.आर.दूगड़ आदि ने संस्थान द्वारा प्रकाशित ग्रंथ 'जैन फिलोसॉफी : अ सांइटिफिक अप्रोच टू रियलिटी' पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित किया।

शासनश्री मुनि सुमेरमलजी 'सुदर्शन' द्वारा तिविहार अनशन का स्वीकरण

२६ अगस्त को दिल्ली में प्रवासित शासनश्री मुनि सुमेरमलजी 'सुदर्शन' ने तिविहार अनशन स्वीकार किया है। समाचार लिखे जाने तक उनका अनशन प्रवर्धमान है।

स्मृति संबल

- गडसिवाना निवासी मदुरै प्रवासी श्री घेवरचन्दजी गोलेच्छा (सुपुत्र स्व. श्री बागजी गोलेच्छा) का निधन हो गया। वे धार्मिक, सेवाभावी एवं सौम्य स्वभाव वाले श्रावक थे। वे गुरुभक्त श्रावक थे। ५० वर्षों से प्रतिवर्ष मर्यादा महोत्सव के अवसर पर गुरु सन्निधि में पहुंचते थे। सिवांची मालाणी के आसपास विचरणशील चारित्रात्माओं के सेवा में जागरूकता रखते थे। पूरे परिवार को गुरु के प्रति श्रद्धा रखने की विशेष प्रेरणा देते थे। गोलेच्छा परिवार संघ की सेवा में जागरूकतापूर्वक तल्लीन है।
- बरार निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्री भंवरलालजी देरासरिया (सुपुत्र श्री नंदनरामजी देरासरिया) कालधर्म को प्राप्त हो गए। उनके प्रतिदिन २ सामायिक का नियम था। वे सरल स्वभावी एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाले बारहव्रती श्रावक थे। प्रतिवर्ष गुरुदर्शन एवं सेवा उपासना का लाभ लेते थे। अंतिम समय में संथारा स्वीकार कर श्रावक के तीसरे मनोरथ को पूर्ण किया। देरासरिया परिवार अच्छा श्रद्धाशील परिवार है।
- सरदारशहर निवासी चेन्नई प्रवासी श्रीमती राजश्री गधैया (धर्मपत्नी स्व. श्री रतनलाल गधैया) का निधन हो गया। वे श्रद्धाशील एवं भक्तिमान श्राविका थीं। स्वस्थता की स्थिति में प्रतिदिन एक सामायिक के नियम का अनुपालन किया। चेन्नई महिला मंडल की प्रथम अध्यक्ष के रूप में उन्होंने अपनी सेवाएं दीं। सरदारशहर में रहते समय चारित्रात्माओं की सेवा-उपासना में जागरूक रहती थीं। गधैयाजी की हवेली में अनेक चारित्रात्माओं का प्रवास होता था। अंतिम समय में १६ घंटे का संथारा कर उन्होंने श्रावक के तीसरे मनोरथ को पूर्ण किया। सरदारशहर का गधैया परिवार संघ एवं संघपति के प्रति समर्पित परिवार है।
- खेरवा निवासी पाली प्रवासी श्री कानमल सोनीमण्डिया (सुपुत्र श्री जीवराजजी सोनीमण्डिया) का निधन हो गया। वे श्रद्धावान एवं भक्तिपूर्ण श्रावक थे। प्रतिदिन सामायिक आदि का क्रम चलता था। प्रतिवर्ष गुरुदर्शन का नियम था। आचार्य भिक्षु के प्रति उनकी आस्था प्रगाढ़ थी। उन्होंने युवावस्था में चारित्रात्माओं की सेवा उपासना का दायित्व जागरूकतापूर्वक निभाया। अपने परिवार में संस्कारों का बीजारोपण किया। सोनीमण्डिया परिवार में धर्म की अच्छी भावना है।
- राजगढ़ निवासी पीलीबंगा प्रवासी श्री रतनलाल सुराणा (सुपुत्र स्व. श्री नथमल सुराणा) का निधन हो गया। वे एक श्रद्धालु श्रावक थे। सुराणा परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा को भेंट

५१००/- स्व. घेवरचन्दजी बागजी गोलेच्छा (गढ सिवाना-मदुरै) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र बाबूलाल मोहनलाल गौतमचंद गोलेच्छा।

५१००/- स्व. अर्जुनलालजी सिंघवी (आसाहोली-भीलवाड़ा-मुम्बई) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कमलादेवी सुपुत्र व पुत्रवधू अरविन्द-विनीता, अजीत-सपना, सुपौत्र व सुपौत्री निया, आर्यन, आदित्य तनिष सिंघवी परिवार।

५१००/- स्व. हंसराजजी सेठिया (मोमासर-कोलकाता-बेंगलुरु-बालुरघाट) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र राजेन्द्र पवन अरुण सेठिया।

५१००/- स्व. श्रीमती भंवरीदेवी दुगड़ (धर्मपत्नी स्व. गंगारामजी दुगड़, छापर-चेन्नई-दिल्ली-कोलकाता-जयपुर) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू स्व. रणजीत सिंह-कमला स्व. संपतमल-नीलम नौरतन-

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

इंद्रा अमरावसिंह-अनिता बजरंग-सुनीता सुपौत्र व पौत्रवधू मनोज-नीरू विकास-मीनू पंकज-प्रियंका संदीप-भावना पुनीत-ऋचा अमित-दिव्या आशीष-आकांक्षा एवं वंश दुगड़ परिवार।

५१००/- स्व. हनुमानमलजी बैद (लाडनूं-सिलीगुड़ी) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गुलाबदेवी सुपुत्र व पुत्रवधू नरेन्द्र-विनीता महेन्द्र-संजीवनी श्रीकांत-रितू, सुपौत्र पार्थ ऊर्वश प्रांजल बैद।

५१००/- स्व. बहिन पुखराजदेवी (धर्मपत्नी श्री किरणलाल बैद राजलदेसर-जयपुर) एवं भाभीजी स्व. रायकंवरीदेवी (धर्मपत्नी श्री मांगीलाल सेठिया मोमासर-जयपुर) की पुण्यस्मृति में बाबूलाल सेठिया मोमासर-किशनगंज-जयपुर।

५१००/- सौ. हर्षिता (सुपुत्री सुमिता-हीरालाल सुराणा वेलुर-बगड़ीनगर) सह चि. सिद्धार्थ (सुपुत्र शर्मिलादेवी-मुकेश बांठिया पेरम्बुर, चेन्नई-धाकड़ी) के शुभ विवाहोपलक्ष्य में आर.एच. लूणकरण महावीर मोती हीरा संदीप पीयूष पंकज नैतिक सुराणा वेलुर।

स्मारणा

- साधु-साध्वियों की अठाई आदि की तपस्या के संदर्भ में कोई भी अभिवन्दना-अनुमोदना आदि रूप कार्यक्रम न किया जाए।
- आचार्यप्रवर की अनापत्ति के बिना अपने यथानिर्दिष्ट चोखळे से अतिरिक्त श्रावकों को किसी कार्यक्रम में आहूत न किया जाए।
- सामान्यतया महीने में एक रविवार के सिवाय शेष रविवारों में साधु-साध्वियों का व्याख्यान होना चाहिए। अपेक्षित हो तो मूल प्रोग्राम के बाद यत् किंचित् कार्यक्रम चल सकता है। महीने में एक रविवार को कोई कार्यक्रम रखा जा सकता है।
- साधु-साध्वियों व समणी की दैनन्दिन वक्तव्यों की न्यूज न छपे। किसी कार्यक्रम विशेष की न्यूज छपे तो आपत्ति नहीं। विशेष कार्यक्रम की भी एक सप्ताह में एक से ज्यादा न्यूज न छपे। विकासमहोत्सव, मर्यादामहोत्सव आदि संघीय कार्यक्रम इसके अपवाद हैं।
- कार्यक्रमों के आमंत्रण-पत्र एवं क्षेत्रीय विज्ञप्ति आदि चोखले की सीमा से बाहर संप्रेषित न किए जाएं। उनमें साधु-साध्वियों के व्यक्तिगत फोटो व संदेश भी न हों।

(श्रावक संदेशिका धारा- २२६-२३०)

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

•

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला